संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीता देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुविषय–बहुभाषिक शोध की मासिक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 13, Issue 9-10
पृष्ठ : 138-141

ममता कालिया के लघु उपन्यासों में नारी समस्या

प्रो. रेखा चौधरी, निदेशक
योगेश सिंह, शोधार्थी
हिंदी विभाग, ए के पी डिग्री कालेज, खुर्जा, बुलन्दशहर।

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 को वृंदावन उत्तर प्रदेश में हुआ अस्पताल में दादी बच्चे की आवाज सुनकर पहचान गई की आवाज लडके की नहीं लडकी की है। दादी कांप उठी तभी डॉक्टर ने कहा–बडी अम्मा मुबारक हो पोती हुई है। पोती सुनते ही दादी का चेहरा पीला पड़ गया ममता कालिया अपने परिवार की दूसरी और अंतिम संतान थी 'जिस दिन वह पैदा हुए उसी दिन घर में कोई जश्न नही मनाया गया बल्कि घर में चूल्हा तक नहीं जलाया। उनकी दादी लालटेन की टिमटिम रोशनी में सिर पर हाथ रखकर तख्त पर बैठी रही मानो लडकी का जन्म नहीं घर में कोई मातम हो आज भी बेटी के जन्म पर सामाजिक मानसिकता पर ज्यादा परिवर्तन दिखाई नहीं देता है। ममता कालिया के जन्म से दादा–दादी ही नहीं बल्कि मां–बाप को भी दुख हुआ दिमाग में बस एक ही बात रह रह के आ रही थी कि यह बच्ची लड़का होती तो आज मेरी सारे दुखों का अंत हो जाता। पर यहां तो परिस्थितियों ने अपना रुख बदल दिया बच्चे के जन्म के बाद मां की छाती दूध से भर जाती है लेकिन यहा भैया चिंता और आशंका से मां का दूध ही सूख गया डॉक्टर ने अचरज से मां को देखा और कहा 'कैसी मां हो ममता नहीं है'' ममता कालिया का बचपन सुख में नहीं था जहां से उनके जीवन की शुरुआत थी उन्हें। वहां से ही उन्हें संघर्षों ने घेर लिया 2 साल की उम्र में ही चेचक, काली, खांसी और गर्दन तोड़ बुखार जैसी खतरनाक बीमारियों ने उन्हें घेर लिया पहले उपचार भी इतनी आसान उपलब्ध नहीं थे परंतु ईश्वर की असीन कृपा होने के कारण उनका जीवन बच गया।

माता-पिता :-

ममता कालिया के माता का नाम इंदुमती और पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल था। इनकी माता बहुत भोली थी वह बहुत ही संस्कारशील एवं उन्हें सजने संवरने का शौक था लेकिन वह अधिकतर बीमार ही रहती थी ममता कालिया के। घर का वातावरण शिक्षामय था। वे अपने घर के संदर्भ में कहती हैं कि –'हमारे घर में हर महत्वपूर्ण घटना अथवा विषय पर पापा बड़े विस्तार से चर्चा करती थी यही ढंग भारत चाचा का था मुझे याद है इन्हीं दोनों पापा ने हमें गांधी जी की आत्मकथा का संक्षिप्त संस्करण लाकर दिया था हमें जन्मदिन पर भी किताबें ही मिलती थी पापा से शिक्षा में मनोरंजन मिला दिया जाता था। ममता कालिया की प्रारंभिक शिक्षा गाजियाबाद तथा आगे की शिक्षा दिल्ली में शुरू दिल्ली में ही समापन किया 1963 दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य मे एम ए किया। ममता कालिया का दांपत्य जीवन 12 दिसंबर 1965 को दिल्ली में रवींद्र कालिया

के साथ शुरू हुआ रवीद्र कालिया जी कैसे उनकी ओर आकर्षित हुए उन्होंने लिपिका शाह से बातचीत के दौरान कहा 'सन 1965 में ही दिल्ली में रहती थी ममता की कविताओं की धार और समाज के हर मुद्दे पर स्पष्ट मतवाद से मुझे आकृष्ट किया'। ममता कालिया जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. के बाद जुलाई 1963 से 1965 तक प्रवक्ता पद पर अध्यापन का कार्य किया था। विवाह के पश्चात नारी बाई दामोदर ठाकुर महिला विश्वविद्यालय मुंबई में नौकरी की 1973 में महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज इलाहाबाद में प्राचार्य पद पर कार्यरत रही कई शहरों की खाक छानने के बाद अब लेखिका दिल्ली में रहती हुई स्वतंत्र लेखन कार्य कर रही है।

रचना संसार :-

ममता कालिया पहले कहानियां लिखती थी परंतु उसके पश्चात उपन्यास लिखना आरंभ किया उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय शिक्षित नारी और उनकी समस्याओं को उठाया गया है 1. बेघर 1971, 2. नरक दर नरक–1975, 3. लड़कियां, 4. प्रेम कहानी 1980, 5. एक पत्नी के नोट्स–1994

लघु उपन्यासों में नारी समस्या :-

(एक पत्नी की नोट्स, लड़कियां, प्रेम कहानी के संदर्भ में) ममता कालिया ने कुल 8 उपन्यास लिखे जिनमें बेघर नर्मदा नरक प्रेम कहानी लड़कियां एक नोटिस एक पत्नी के नोट्स है। इनका उपन्यास साहित्य आदमी को मैं शायद समय के साथ सामाजिक समस्या और मानवीय मूल्यों में तेजी से परिवर्तन का परिचायक है क्योंकि ममता कालिया ने आधुनिक नारी जीवन की संभितियां का चित्रण कर बदलती परिस्थितियों में नारी के बदलते रूप तथा व्यक्तिगत व्यवस्था एवं सामाजिक स्थिति से जूझने की प्रेरणा देने का सफल प्रयास किया है। ममता कालिया ने ग्रामीण नगरीय एवं महानगरीय स्त्रियों के शोषण एवं समस्या को अपने साहित्य का विषय बनायाहै स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया है। जिन महिलाओं के बारे में आज तक कहीं भी लिखा नहीं गया हो जो आज तक अंधेरे में थी ऐसी महिलाओं को उन्होंने अपनी साहित्य के द्वारा प्रस्तुत किया और साथ ही यह भी प्रमाणित किया कि ये महिलाए शिक्षित हो या अनपढ़ हो चाहे ग्रामीण हो नगरों, महानगरों में रहने वाली भी हमेशा अपने कर्तव्य, ईमानदारी और नैतिकता का पालन करती हैं। स्त्री के अस्तित्व और अस्मिता की पहचान। 19वीं शताब्दी से पूर्व समाज में नारी को सेक्स प्रेम और विवाह तक सीमित रखा गया था। इसलिए तत्कालीन साहित्य में श्रृंगार रस की प्रधानता रही है। प्राचीन आचार्यों ने न्यायिकताओं के भेद किए जो मुख्त नारी की प्रकृति स्वभाव अवस्था स्थिति में शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा विवेचना के अनुरूप है। स्वतंत्रता काल में स्त्री साहित्य ने जीवन के गंभीर से गंभीर विषय को भी बड़ी सहजता और सामान्य रूप से उठाया है। इस युग की अनेक सशक्त में लेखिकाओं ने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से ओपेरा है स्वतंत्रता के बाद प्रथम दशक में लिखे गए साहित्य में विशेष कर स्त्री के अधिकारों एवं उसकी आर्थिक स्थिति की ओर विशेष ध्यान दिया स्त्री की पुरुष से बराबरी करना, उच्च शिक्षा प्राप्त करना, आर्थिक स्वतंत्रता का अनुभव करना, आज ममता कालिया के लेखन साहित्य का प्रमुख विषय रहा है ममता।

ममता कलियाकृत एक पत्नी के नोट्स उपन्यास की नायिका कविता का मानसिक ढांचा अकादमी की जिंदगी के लिए बना था किताबें पढ़ना लेक्चर तैयार करना सेमिनार अटेंड करना भाषण देना और घंटा खाली

लेटना इसी जिंदगी के अंतर्गत आने वाली क्रियाएं थी वह इस तरह से वापस अपना प्रिय माहौल पागल हो गई। लड़कियां उपन्यास की नायिका लिली परिवार और पति की दखलंदाजी से बचने के लिए विभाग के प्रस्ताव को ठुकराकर मुंबई जैसे महानगरों में अकेली रहकर नौकरी करती है। स्त्री का विद्रोही स्वर भारतीय संस्कृति में स्त्री सदियों से शोषित दलित रही है उन पर होने वाले इन अविनीत अत्याचारों को चाहे वह परिजनों की ओर से किए गए हो या किसी अन्य की ओर विरोध करने वाली स्त्री को अच्छी नजर से देखा नहीं देखा जाता।

उन्मुक्त जीवन :-

नारी के उन्मुक्त जीवन को पारंपरिक परंपरा सामाजिक में जिस स्वतंत्र कोई विग्रह नारी की परिप्रेक्ष में देखा जाता है। सहा एवं उनके बनाए मुक्त स्त्री जीवन को मुक्त जीवन के रूप में देखा जाता है किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष। किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष में उन्मुक्त जीवन को व्यक्त करने में यह परिभाषा असमर्थ है। प्रेम कहानी उपन्यास की अश्वनी का विश्वास था कि वह अपना जीवन अपनी इच्छा अनुसार जिन चाहेगी जय उसके संदर्भ में रहती है ऐसा का मुख्य। ऐसा का मुख 55 मुझे उत्तेजक लगता है वह मुझसे ज्यादा मुक्त और कौन था ही थी जीवन से उसकी अपेक्षाएं भी ज्यादा थी लेकिन ऐसा को अपने मां-बाप का रवैया हमेशा सुनने लगता करता है। वह दया से कहती है तू अपने घर की इकलौती औलाद है। जब मुझे क्या पता चल लड़कियों के बाप को अपनी बेटी बहाने की कैसी उतावली रहती है। वह रिश्ता ढूंढने समय नहीं देखे रिश्ता लड़की के लायक है या नहीं वह तो गिनती पूरी करते हैं? प्रत्याग तलाक एवं अकेलेपन का संत्र। परंपरागत स्त्री जीवन विवाह पश्चात डोली और आरती के मध्य समय सिमट होता था स्त्री के लिए पिता एवं पति के घर के इधर किसी तीसरी सम्मानजनक स्थिति की प्रकल्पना नहीं करते किंतु जैसे स्त्री जागृत हो रही है अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही है। वैसे-वैसे विवाह और दांपत्य संबंध तेजी से विविधित्व हो रहे हैं। तलाक की सूट सुलभता ने इन संबंधों के निर्वाह और कठिन कर दिया है। इस दृष्टि से विभाजित करें तो औरत के दो वर्ग पहले वर्ग जो आर्थिक रूप से स्वावलंबी नहीं है उन्हें मर्द समाज का जुल्म सी पड़ेगा मगर जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र है उन्हें एक मुक्ति का रास्ता नजर आता है वह है तलाक जो कि स्वस्थ विकल्प नहीं है।

सुरक्षा का भय :-

गर्भ से लेकर समाज तक असुरक्षित नारी जब नारी गर्भ में ही सुरक्षित नहीं है तो बाहरी वातावरण में उसकी सुरक्षा के दावे करना बेमानी है। नारी ने बहुत ऊंचाइयां छूई है लेकिन अभी तक कुछ किया जाना बाकी है उसकी चीज उसकी चिल्लाहट उसकी वेदना उसकी प्रेरणा उसका आर्तनाद उसकी बेबसी उसकी अकथ गाथा ऐसा लगता है। समाज ने पूरी तरह से सुनी नहीं है सुनी होती तो गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ-साथ उसे गोलियों से क्यों भून दिया जाता है। औरत पहले औरत है फिर हिंदू या मुस्लिम फिर सवर्ण या असवर्ण फिर देशी या विदेशी थाने में महिला के साथ अत्याचार कुकर्म घर परिवार में सुरालियों के मामले सेवा संस्थानों में गीधो की नजरे संस्कृति के नाम पर उसके अस्तित्व को निरंतर मिलती चुनौती।

दहेज समस्या :-

आजकल के समाज मे भी प्राचीन काल से चली आ रही समस्या दिखाई देती है। आधुनिक काल तक आते-आते इसका रूप इतना विकृत बन गया है कि आये दिन अखबारों में दहेज के लिए जिंदा जला देना, मार देना है जैसी घटनाएं पढ़ने को मिल जाते हैं। अवैध संबंध-पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण। आज कल

अधिकतर महानगरों में यह समस्या बढ़ती जा रही है। शादी से पहले शारीरिक संबंध रखना तो आम बात मानी जाती है साथ ही साथ शादी किए बिना भी कुछ लोग वैसे संबंध रखते हैं। 'नरक दर नरक' उपन्यास में उपन्यास का नायक जगन उषा को लेकर उसके लांज पर ले जाता है और वहां उन दोनों का मिलन हो जाता है। जहां में ही क्या स्थिति हो जाने के कारण एक दूसरे को समझ नहीं पाते हैं।

अधिकारियों का स्त्री लपटता :-

आधुनिक काल में जब स्त्रियां नौकरी करने लगी है तो उन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक औरतों ने घर की पूरी जिम्मेदारी और फिर नौकरी देखनी पड़ती है। इस प्रकार के गतिमान जीवन के दौरान उन्हें अपने सहकर्मियों से अफसर से कर रहे हैं ना पड़ता है। ऐसे तौर पर अवसरों को अपने अधीनस्थ काम करने वाली स्त्रियों की ओर देखने की दृष्टि अलग ही होती है। ऐसी हालत में स्त्रियों का फायदा उठाने की प्रवृत्ति विभिन्न अधिकारियों के पास होती है। कई बार स्त्रियां शिकार भी बन जाती हैं। किस प्रकार साहित्यकारों के लिए भी कितनी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस बात को भी ममता जी के साहित्य में जान सकते हैं। ममता जी सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत नई समस्याओं को लगाओ। ममता जी सफल दिखाई देती है।

संदर्भ सूची :-

1. प्रतिनिधि कहानिया पेज नंबर 1 लेखक ममता कालिया।
2. ममता कालिया के लघु उपन्यासों में नारी विमर्श पेज नंबर 9 लेखक शफिका दस्तगीर मुलाणी।
3. वही, पेज नंबर 10
3. वही, पेज नंबर 11, 12
4. ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व पेज नंबर 15 लेखक संविदा बीजापुर।
5. ममता कालिया के लघू उपन्यासों में नारी विमर्श। पेज नंबर 69
6. वही, पेज नंबर–71
7. वही, पेज नंबर–72, 73
8. ममता कालिया की कथा साहित्य में नारी चेतना, पेज नंबर 170, लेखक सीमा शर्मा।

योगेश सिंह शोधार्थी
ए के पी डिग्री कॉलेज, खुर्जा, बुलन्दशहर।
मो. न. 9548216846